

ऐसे परम तपोनिधि जहाँ-जहाँ, जाते हैं...जाते हैं ।  
परम शांति सुख लाभ जीव सब, पाते हैं...पाते हैं ॥  
भव-भव में सौभाग्य मिले, गुरुपद पूजूँ ध्याऊँ ।  
वरूँ शिवनारी... नारी, वरूँ शिवनारी ॥४ ॥

(१२)

हे परम दिगम्बर यति, महागुण व्रती, करो निस्तारा ।  
नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥  
तुम बीस आठ गुणधारी हो, जग जीव मात्र हितकारी हो ।  
बाईस परीषह जीत धरम रखवारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥१ ॥  
तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो, प्रभु वीतराग वनवासी हो ।  
है रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥२ ॥  
तुम क्षमा शांति समता सागर, हो विश्व पूज्य नर रत्नाकर ।  
है हित-मित सद् उपदेश तुम्हारा प्यारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥३ ॥  
तुम धर्म मूर्ति हो समदर्शी, हो भव्य जीव मन आकर्षी ।  
है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥४ ॥  
है यही अवस्था एक सार, जो पहुँचाती है मोक्ष द्वार ।  
'सौभाग्य' आप-सा बना होय हमारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥५ ॥

(१३)

है परम-दिगम्बर मुद्रा जिनकी, वन-वन करें बसेरा ।  
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ॥  
शाश्वत सुखमय चैतन्य-सदन में, रहता जिनका डेरा ।  
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ॥टेक ॥  
जहाँ क्षमा-मार्दव-आर्जव-सत् शुचिता की सौरभ महके ।  
संयम-तप-त्याग-अकिंचन स्वर परिणति में प्रतिपल चहके ।  
है ब्रह्मचर्य की गरिमा से, आराध्य बने जो मेरा ॥१ ॥